International Journal of Creative Research Thoughts
Volume 2, Issue.3, March 2014
ISSN:-2320-2882

ORIGINAL ARTICLE

''बैंगाओं के चर्मत्कारिक नुस्खे परपरागत चिकित्सा पद्धिति जनजाति क्षेत्र मे बैगा व गुनिया–रोगियों का जड़ी बुटियों एवं वन्त्र मन्त्र से उपचार विधि के विशेष संदर्भ में''

शोधार्थी
(श्रीमति सुनीता पन्द्रों)
एम.ए. नोट क्वालीफाईड
(समाजशास्त्र)
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय
भोपाल, (म.प्र.)

सारांश :–

परंपरागत चिकित्सा पद्धति के अन्तर्गत जनजातिय क्षेत्र मे बैगा व गुनिया रोगियों का जड़ी बूटियों एवं तंत्र मंत्र से उपचार करता है। प्रायः प्रत्येक बीमारी के लिये अलग –अलग जड़ी होती है। बैगा ग्रामों के अधिकांश बैगाओं को इन जड़ी बूटियों का ज्ञान होता है। जनजातीय चिकित्सा पद्धतियों को अविश्वास अथवा संदेश की द्वष्टि से देखा जाता है। परन्तु यह समय सच है कि आदिवासियों का वनौषधि श्रान अनंक बार चमत्कृत करता है। बैगा जनजाति आदिवासी मुख्यतः निम्न जड़ी – बूटियों का उपयोग करते है। जो इनके जंगलो मे बहुतायत से प्राप्त हो जाती है। बैगा आदिम जनजाति बैगा एवं आदिवासी जड़ी बूटियों से विशेष चिकित्सा पद्धति जिनमें मुख्यतः हर्रा या हरड (Terminalia chebulaa), बहेड़ा (Teminali), अवला (Phyilanthus emblica), वन अदरक,बांस की पिहरी, कियों कंद (Codtus speciosus), तेलिया कंद, वन प्याज,वंश लोचन, सरई की पीहरी, कलिहारी (GLORIOSA SUPERBA), काली हल्दी (कुरकूमा सीरिया), वन, सिंघाडा,ब्रम्ह रकास, तीखर, बैचांदी,बिदारी कंद वन सूरन, कसौंधी_(Cassiatora), कुलंजन, माई बेला की जड़, अंड़ी की जड़, चिटकी की जड़ किमाच (Mucuna puririta), बेर की जड़, वन अंडी, मैनहर, भकरैंडा, बच (Acorus.calamus), भैंसबच, पारसपीपर,जलनी, छोटी दूधिया, नागरमोथा (Saispras. Rotandas), जरीया, रूहीना, अकरकरा (Spilanth. qcumell), पथरचटा, हड़जुड़ी महुआ (Madhuca icdca), काली धान, खांड़ा धार, चिरायता (Andrograp his), चिरचिरा (अपामार्ग) (Achyranthes, aspera), सफेदमूसली (cholorophytum. arundimaceum), काली मूसली, छोटी करेटी, मुलहटी (Gilisiraeza glebra),मरोड़फल्ली (Helicteres isora), लडैया का पत्ता, गुडमार, चैंच भाजी, चकौंडा भाजी, पकरी भाजी, हड़सिंघडी ब्राम्ही (Bacopimonnier), जोगी लटी, बनछूरिया की बल, अमर बेल (Cuscuta reflexa), भूतन बेल , बेल (Aegle marmeios), सरई छाल , कूढ़ा छाल, साहू छाल मैदा छाल (Letea glutiosa), अर्जुनछाल (Teminali), विधानाशी, सत्यानाशी, सिरमिली, सर्पगंधा (Rauvalfia , serpenfina), समेल (Bombot Ceiba),अकवन (Caltropis

Please cite this Article as : श्रीमति सुनीता पन्द्रों ''''बैंगाओं के चर्मत्कारिक नुस्खे परपरागत चिकित्सा पद्धिति जनजाति क्षेत्र मे बैगा व गुनिया–रोगियों का जड़ी बुटियोंएवं वन्त्र मन्त्र से उपचार विधि के विशेष संदर्भ में'' :International Journal Of Creative Research Thoughts, Volume 2, Issue.3, March 2014

procera), हल्था जोडी ठल ठली कुब्बी, हिरन चरी, गंवार पाठा पाताल कुम्हडा जटा शंकरी, अश्वगंधा (Sommifera Withani), वन तुलसी भोज राज तेंदू, धननियां सनाय (Cassia angustifolia), बड़ी सतावर (Asparagusracemosus), नागदाना करई, हुलहुलिया, छिंदी बबूल (Acaciaarabica), धनवंतरी, भिलवां (Semicarpus anacardium), गुलर (Ficis giomerata), लक्ष्मण कंद पोटीया कंद, केसरी, कंद,करंज, (Pongamia pinnata), हुरूम कंद, भैंसा ताड़, किटी मार कंद, बांदी सांड़ बड़ी ऐंठी, छोटीऐंठी गिलोय (Timospora. Cardifo), बहला – ककोरा,आमी हल्दी, जामुन, पूनर्नवा, लाजवंती गोखरू (xanthium strumarium), अडूसा (Adhatoda), गुडमार (Gymmena Sylvester), कुरकुट के पत्ते, सांप लोढ़ आदि जड़ी – बुटियों का उपयोग जीवन भर चलता रहता है।

जनजातीय चिकित्सा पद्धतियों को अविश्वास अथवा संदेह की द्वष्टि से देखा जाता हैं। परन्तु यह सच है कि आदिवासियों का वनौंषधि ज्ञान अनेक बार चमकृत करता है। हड्डी टूटने पर हड़जुड़ी की पत्तियां का पेस्ट बनाकर उस स्थान पर बांधने और खाने से हड्डी कुछ ही दिन में जुड़ जाती है। शरीर मे कहीं चोट लगने पर ये लोग तुरंत कुरकुट के पत्तों को पीसकर उसका लेप कर देते है। जिससे उस स्थान का घाव भर जाता है। और उसमें टांके लगाने की जरूरत भी नहीं पड़ती।

मलेरिया बुखार आने पर पीपल की दातून करें। उसकी पहली पीक थूंक दें, बाकी गुटक लें, तो केसा भी मलेरिया बुखार हो ठीक हो जाता है। लडैया के पत्ते को प्रत्येक बुधवार या रविवार को सुघाने से भी मलेरिया बुखार ठीक हो जाता है। दांत दर्द के भकरेंडा की दातून तीन दिन तक करने से दांत के कीड़े मर जाते है। दांत दर्द ठीक हो जाता है। छिवला (पलाश) की जड़ से दातुन करने और छाल का ंजन करने से पायरिया मुंह की बदबू ठीक हो जाती है। दांतो के हिलने पर मरीज को बिना तललाये मुर्गी की ताजी बीट को काड़ी में लगाकर दर्द वाले स्थान पर लगाने से थोड़ी देर में दात गिर जाते हैं। सिर या दाढ़ी के बाल अचानक झडने पर शराब बनाने बाले भटके की कालिख को एकत्र कर उस स्थान पर लगाने से दूसरे ही दिन बाल आने लगते है।

मूत्र विकार मे जरीया पौधे की ढाई पत्ती को चबाकर उसके रस को निगलने से तथा उसकी पत्तियों को चबाकर उसे गुदी मे लगाने से पेशाब की जलन ठीक हो जाती है। जुलाब लाने के लिये वन अंण्ड़ी की जड़ को अगुली से नापकर अधिकतम दो या तीन अंगुल चूसने से दो या चार जुलाब हो जाते है।

आंखों का आ जाना या आंखो मे लालिमा बने रहने पर नमक की ड़ली को आंख पर लगाकर मंत्र पढ़कर उस नमक की डली को पानी के मटके मे नीचे रख देते है, जैसे ही नमक की घुलन शुरू हो जाता है। आंखों की लालिमा और दर्द में रहत मिलने लगता है। आंख आने पर जरीया की पत्ती को चबाकर आंख में फूकने से आंख का दर्द ठीक हो जाता है। छोटे बच्चों को दस्त लगने पर मुर्गी के

अंडे को फोड़कर उसे जमीन मे एक पत्ते में रखकर उसके ऊपर बच्चे को बैठा देते है। जिससे बच्चे की गुदा में संकुचन होता है। और उस अंडे का द्रव गुदा द्वार से एस बच्चे के पेट मे पहुॅच जाता है। जिससे उस बच्चे के दस्त बंद हो जाता है।

सर्प काटने पर इंद्रावन की जड़ को खिलाते है। तथा करौंदा की जड़ को पानी में उबालकर पिलाने से या राहर की जडो को चबाने से जड़ो को चबाने से सर्प का जहर उतर जाता है। जिस स्थान पर सर्प ने काटा होता है। उस स्थान पर ब्लेड से खुरच कर उसके ऊपर रस्सी से बांध देते है। जिस स्थान पर सर्प ने काटा है। उस स्थान पर मुरगी के चूजे की गुदा लगाते है। जिससे चूजा मर जाता है। या क्रिया तब तक की जाती है। जब तक की जहर नहीं उतर जाता। सांप के जहर उतरते ही चूजों का मरना बंद हो जाता है।

इसी प्रकार पागल कुत्ता या सियार के काटने पर राहर दाल के पौधे में पाये जाने वाला एक प्रकार का कीड़ा, मक्के का पुष्पांग तथा इंद्रावन की जड़ को पीसकर गुड़ या महुआ की शराब के साथ पिलाते हैं। जिसके कारण पेशाब से खून के कतरे गिरते हैं। जिसे ये लोग पिल्ला गिरना कहते हैं।

इन जड़ी–बूटियों से तैयार की गई औषधियों के सेवन करने से बीमारियों में स्थाई सुधार होता है। ये औषधियां बीमारियों को जड़ से खतम कर देती हैं। इन जड़ी–बूटियों के सेवन से किसी भी प्रकार के दुष्प्रभाव नहीं होता है। ये अपने अनुभवों सेअनेकों बीमारियों का इलाज कर लेते हैं। इनको अपनी चिकित्सा पद्धति पर अटूट विश्वास रहता है। असाध्य रोगो की चिकित्सा जड़ी–बूटियों के अलावा गुनियों के द्वारा ही की जाती है। गुनिया अपना पूरा ज्ञान अपने शिष्यों को नहीं देते हैं। जिससे असाध्य बीमारियों की चिकित्सा पद्धति लुप्त होती जा रही है।

इन्हीं जड़ी–बूटियों के सहारे बैगा युवतियों अपने सम्पूर्ण शरीर में गुदना गुदवाती हैं। बैगा युवतियों गुदना गुदवाने के लिये बीजा वृक्ष के रस या रमतिला के काजल में दस बारह सुईयों के समूह को डूबाकर शरीर की चमड़ी में चुभाकर गुदवाती है। खून बहने पर रमतिला को तेल लगाते है। इनकी ऐसी धारणा है कि गुदना गुदवाने से गठिया वात या चर्म रोग नहीं होते।

जड़ी बूटियों से प्रसव एवं परिवार शीघ्र प्रसर के लिये अंड़ी की जड़ की अंगूठी बनाकर अंगुली में पहनाते हैं जिससे प्रसव शीघ्र हो जाता है। प्रसव के बाद प्रसूता को माई बेला की जड़ चबाने को देत है तथा उसे स्नान करने के लिये रूहीना पेड़ की छाल को पानी में उबालकर उससे स्नान कराते हैं। जोगी लटी की जड़ा (शतवार) को गुड़ के साथ पीसकर खाने से प्रसूती की खून की कमी दूर होती है ओर दूध उतरने लगता है। दूधिया को खिलाने से भी दूध उतरने लगता है।

गर्भ धारण कराने के लिये पंचगुदियाके पाचं बीज पांच खुराक या पारस पीपर के ढ़ाई बीज या शिव लिंगी के पांच बीज तथा गांजा के पांच बीज दोनों को मिलकार कुल दस बीजों को महिला को तीस दिन तक लगातार खिलाया जाता है, इन तीस दिनों के बीच प्रति सोमवार उपवास भी रखना होता है। ऐसी मान्यता है कि ऐसा करने से उस महिला के बच्चे पैदा होने लगते हैं। दस बीज की दवा लेने के साथ–साथ उसे अपने पति के साथ संसर्ग बनाये रखने की सलाह दी जाती है। इन बीजों को माहवारी होने के बाद शक्कर तथा दूध के साथ मिलकार देने से गर्भ ठहर जाता है।

परिवार नियोजन के लिये बहला ककोरा के कांदा को गुड़ या शराब के साथ खिलाने से संतान की उत्पत्ति बंद हो जाती है या निरवाज या निरवंशी (यह एक छोटा सा झाड़ होता है) की जड़ एवं पत्तियों को कूट छानकर पाउड़र बना लिया जाता है, जिसे गुडके साथ गोली बनाकर स्त्री–पुरूष दोनों को सात दिनों तक लगातार खिलाते हैं। जिससे बच्चे होना बंद हो जाता है। यह दवा पुरूष के बीज को मारती है। इस दवा से सेक्स जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

गर्भपात कराने के लिये महुआ की प्रथम आसवित शराब जिसे फूल कहते हैं। उसे एक गिलास पिलाने से गर्भपात हो जाता है। मासिक धर्म नियमित न होने पर लाल अंड़ी के झाड़ की जड़ को खाली पेट सुबह–शाम तीन दिन तक लगातार खिलाने से मासिक धर्म नियमित आने लगता है। माई बेला की छाल को पीसकर पानी के साथ सेवन करने से मासिक धर्म नियमित रूप से आने लगता है। श्वेत प्रदर, ल्यूकोरिया, जिसे सफेद पानी या धात जाना भी कहते है। उसके लिये कछुए के सिर को आग से सेंक कर चने के दाने बराबर थोड़ा सा गुड़ के साथ मिलाकर सुबह–शु एक सप्ताह तक खिलाने से सफेदा पानी जाना ठीक हो जाता है। बिदारी कंद की छाल को काटकर उसे सुखाकर उसके पाउड़र को एक चम्मच प्रतिदिन एक सप्ताह तक खिलाने से ल्यूकोरिया ठीक हो जाता है। काली मूसली की जड़ केसेवन करने से भी सफेद पानी जाना ठीक हो जाता है।

नपुंसकता के उपचार के लिये ये लोग काली मूसली, सफेद मूसली, सतावार, तेजराज, भोगराज तथा बाल सेमर की जड़ को पीसकर गुड़ के साथ सेवन करने से नपुंसकता हमेशा के लिये दूर हो जाती है। भिलवॉ के बीज को पीसकर शुद्ध घी में पकाकर उसका सेवन करने से नपुंसकता दूर हो जाती है।

निष्कर्ष –

बैगा जनजाति के वैद्य विज्ञान को भी चुनौती देते है। मैंने देखा कि इस जनजाति के लोग शरीर की हड़्डी टूटने, बावासीर तथा दमा श्वांस, एलर्जिक अस्थमा का इलाज गारंटी से

स्थाई तौर पर कर लेते है। दमा श्वांस एर्लजिक अस्थमा के लिये ये लोग सफेद अकवन की जड़, काली हल्दी और अजवाइन को अभिमंत्रित करके कूटकर उसका पाउड़र बनाकर गुड़ के साथ खाने को देते हैं, जिससे पुराने से पुराना दमा, श्वांस के रोगी को मात्र बीस दिनों की खुराक में जीवन भर के लिये स्थाई आराम मिल जाता है। मैंने स्वतः हजारों दमा के रोगियों को इनसे दवा बनवाकर दी है। जिससे मात्र बीस दिनों में उनकी बीमारी हमेशा के लिये ठीक हो गई है। परंपरागत चिकित्सा पद्धति एवं तन्त्र, मन्त्र तथा गुनिया एवं वैद्य के द्वारा बैंगानी चिकित्सा पद्धति का एक विशेष उपचार समस्त मानव के लिए एक Important Medicine *इन्पोरटेन्ट मेडीसिन एवं औरिजनल दवा है।*

:: संदर्भ ग्रंथ सूची ::

1. दि बैगा : बेरयिर एलविन
2. ट्रयबल आर्ट ऑफ मिडिल इंडिया : वेरियर एलविन
3. मानव और संस्कृति : डॉ. श्यामाचरण दुबे(छिंदबाड़ा गजेटियर)
4. आदिम युग की संस्कृति का प्रतीक : (पातालकोट)
5. ट्रायबल्स एंड कास्टस ऑफ दी सेन्ट्रल प्राविन्सेस : रसेल और हीरालाल
6. प्रो. हीरालाल 1997 : आदिवासी अस्मिता का विकास 1997
7. रामचंद्र त्रिपाठी 1985 : ''बैगा जनजाति का सामान्य अध्ययन'' 1985
8. रामभरोस अग्रवाल 1988: गोंड जनजाति का सामान्य अध्ययन –1988
9. आदिवासी संग्रहालय छिन्दवाड़ा (म.प्र.)
10. आकाशवाणी छिन्दवाड़ा
11. पत्रिका – रचना, कादमिब्नी, योजना
12. समाचार पत्र – दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण